१३. निवेश फलन
Investment Function

Dr. Rajani Sontakke(Economics)

निवेश फलन Investment Function

01. निवेश का अर्थ p.1

02. The name of the **निवेश के प्रकार** p.2

03. The name of the **निवेश की विशेषताएं** p.3

निवेश प्रवृत्ति

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता

पूंजी की लाभक्षामता को प्रभावित करने वाले घटक

प्रस्तावना Introduction

निवेश फलन

Dr. Rajani Sontakke

प्रस्तावना:

अर्थ मीनिंग

रोजगार का स्तर बढ़ने की दृष्टि से उपभोग खर्च जैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, उसी प्रकार निवेश खर्च बढ़ने से रोजगार का स्तर भी बढ़ता है।

कींस की निवेश की परिभाषा: ," पूंजीगत वस्तुओं के परिमाण में होनेवाली वृद्धि ही निवेश है।"

निवेश के प्रकार

स्वायत्त निवेश Autonomous Investment

स्थिर उपभोग के स्तर पर जो निवेश किया जाता है उस निवेश को स्वायत्त निवेश कहते हैं।

निवेश की विशेषताएं:

1. स्वायत्त निवेश पर आय में होनेवाले परिवर्तनों का परिणाम नहीं होता।
2. आर्थिक प्रणाली के बाह्य घटकोंका जैसे - जनसंख्या, विदेश व्यापार, तंत्र संबंधी परिवर्तन, संशोधन, युद्ध, अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति, ई. घटकों का परिणाम होता है।

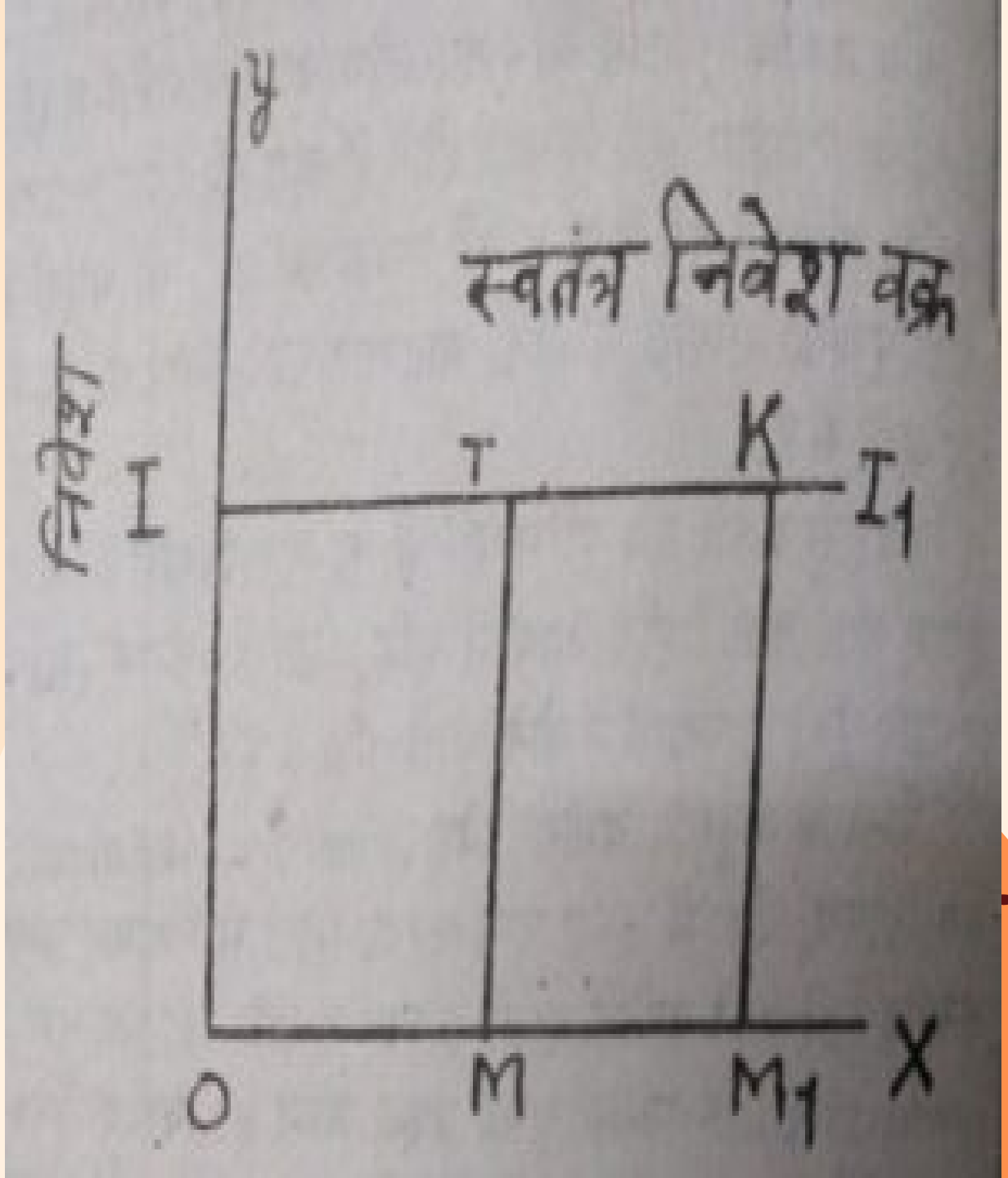

प्रेरित निवेश Induced Investment

उपभोग एवं हाय के बदलते हुए स्तर पर किया जाने वाला निवेश प्रेरित निवेश होता है आय बढ़ने पर उपभोग खर्च बढ़ता है और यहां बढ़ा हुआ उपभोग में नए निवेश को प्रेरित करता है इसलिए उसे प्रेरित निवेश कहते हैं।

प्रेरित निवेश की विशेषताएं:

1. उपभोग बढ़ने से प्रेरित निवेश भी बढ़ता है।
2. यह निवेश आई पर निर्भर होता है।
3. मुख्यतः प्रेरित निवेश निजी उद्योगों द्वारा ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त करने के उद्देश्य से किया जाता है।

1. भविष्य काल में वस्तुओं की मांग में वृद्धि होने की अगर संभावना हुई तो निवेश बढ़ता है।
2. जनसंख्या अगर बढ़ती है तो वस्तुओं की एवं सेवाओं की मांग बढ़कर प्रेरित निवेश बढ़ता है।
3. प्रेरित निवेश का वक्र नीचे से ऊपर की ओर जाने वाला होता है।

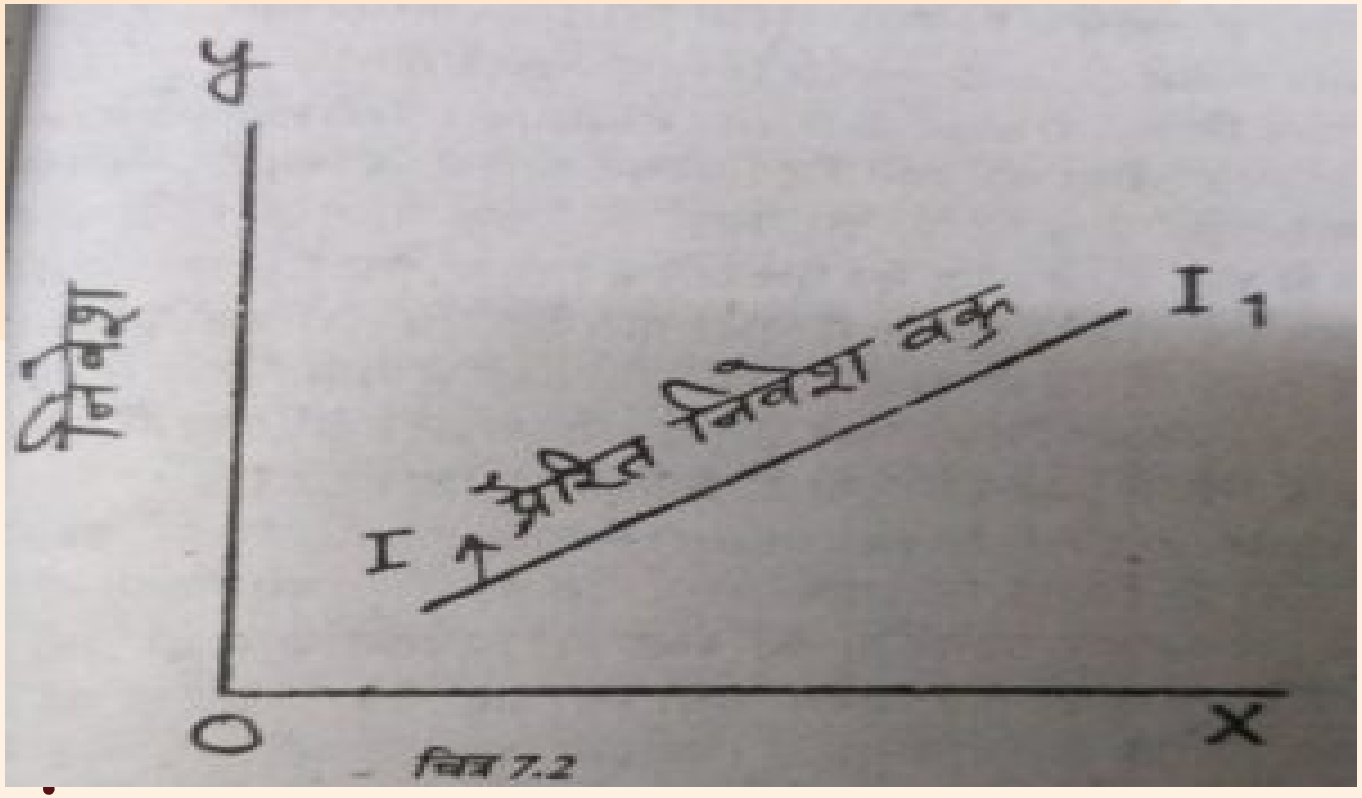

निवेश प्रवृत्ति propensity to invest

साधारण रूप से निवेश आय पर निर्भर रहता हैं। आय बढ़ने से निवेश भी बढ़ता है। आय एवं निवेश के संबंध को किसने निवेश प्रवृत्ति कहा है।

निवेश प्रवृत्ति के दो प्रकार है...

1. औसत निवेश प्रवृत्ति।
2. सीमांत निवेश प्रवृत्ति।

निवेश संबंधी निर्णय:

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में निवेश के सारे निर्णय निजी संयोजक द्वारा लिए जाते हैं क्योंकि अधिकतम लाभ प्राप्त करना यह निजी संयोजक का उद्देश्य होता है निवेश करने के लिए लगने वाला पैसा/ पूंजी निजी संयोजकने स्वयं की बचत से निवेश के लिए इस्तेमाल कीया तो उस बचत पर उन्हें ब्याज प्राप्त हो सकता था परंतु उस ब्याज से उन्हें वंचित रहना पड़ता है अर्थात एक प्रकार से ब्याज यह निवेश के लिए चुकाई गई कीमत होती है बचत किए गए पैसे से नहीं पूंजी संपत्ति खरीदना यही निवेश कहलाता है।

१. औसत निवेश प्रवृत्ति:
निवेश व्यय का कुल आय से जो प्रमाण / अनुपात होता है उसे औसत निवेश प्रवृत्ति कहते हैं।
API = I ÷ Y

२. सीमांत निवेश प्रवृत्ति:
समाज की कुल आय में वृद्धि हुई तो निवेश में भी वृद्धि होती हैं। निवेश में होनेवाली वृद्धि का आय में होनेवाली वृद्धि से जो संबंध होता है उसे सीमांत निवेश प्रवृत्ति कहते हैं।
MPI। = ∆I ÷ ∆ Y

निवेश संबंधी निर्णय पूंजी की सीमांत लाभक्षमता और ब्याज के दर इन दो घटकों से प्रभावित होती है। इस प्रकार निवेश निर्धारित करने वाले प्रमुख दो घटक होते हैं १) पूंजी की सीमांत लाभक्षमता और २) ब्याज की दर

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता Marginal Efficiency of Capital

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता की संकल्पना सर्वप्रथम१०३० में फिशर ने की।

फिशर के मतानुसार, " नये निवेश से होनेवाले लाभ का अपेक्षित दर ही पुंजि की सीमांत लाभक्षमता है। पूंजीगत संपत्ति की किसी अतिरिक्त मात्रा से प्राप्त होनेवाली उत्पत्ति की कीमत से उत्पादन व्यय घटा देने के बाद प्राप्त होनेवाली आय हो पूंजी की सीमांत लाभक्षमता है।"

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता: अर्थ एवम परिभाषा

1. किजर के मतानुसार," पूंजी की सीमांत लाभक्षमता याने कटौती का वह दर है

,जिस दर से पूंजीगत संपत्ति की अपेक्षित आय उसकी पूर्ति कीमत के बराबर होती है।"

2., प्रो. कींस के मतानुसार, " पूंजी की सीमांत लाभक्षमता कटौती की वह दर है जो किसी पूंजीगत साधन के सम्पूर्ण जीवनकाल की वार्षिक प्रत्याशित आयो के वर्तमान मूल्यों को उस मशीन की पूर्ति के बराबर होती है।"

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता दो घटकों पर निर्भर होती है...
१) पूंजीगत साधन की प्रत्याशित आय।
२) उस पूंजीगत साधन का पूर्ति मूल्य।

पूंजीगत साधन की प्रत्याशित आय

पूंजी की प्रत्याशित आय ज्ञात करने के लिए पूंजीगत साधन के एक वर्ष में होनेवाली अपेक्षित भौतिक उत्पादकता का अनुमान लगा लिया जाता है। और इसमें अपेक्षित कीमत का गुना कर दिया जाता है। वार्षिक प्राप्ति अलग - अलग ज्ञात की जाती है।

Annual Returns। =। Expected Physical productivity

=। Expected price of the Commodity

B) पूंजीगत साधन की पूर्ति कीमत

B) पूंजीगत साधन की पूर्ति कीमत:
पूंजीगत साधन की पूर्ति कीमत वह होती हैं जिस पर वह साधन बाजार से खरीददा गया है।
कींस ने साधन के पूर्ति मूल्य स्थान पर पुनर्स्थापन लागत का भी प्रयोग किया है।
साधन की पुनर्स्थापन लागत =। C, अर्थात पूर्ति कीमत
प्रत्याशित आय। =। Q
शुद्ध प्रत्याशित आय। =। Q -C
MEC = शुद्ध प्रत्याशित आय। ÷ पूर्ति कीमत
e। = Q। - Cr या
Q। ÷। Cr =। I। + e

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता की घटती दर

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता दी तत्त्वों पर निर्भर होती हैं

१) प्रत्याशित आय

२) पूर्ति कीमत

विनियोग (करोड़ रुपए)	MEC दर (प्रतिशत में)
२०	१२
४०	१०
६०	८
८०	६
१००	४
१२०	२

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता को प्रभावित करने वाले घटक

अल्पकालीन घटक।

उपभोग प्रवृत्ति
आय में परिवर्तन
अनुमानित लागत
तरल संपत्ति
कराधान नीति
आशावादी एवम निराशावादी दृष्टिकोण

दीर्घकालीन घटक

1. जनसंख्या
2. तकनीकी सुधार
3. नए क्षेत्र का विकास
4. राजनीतिक एवम सामाजिक स्थिति
5. सरकार की आर्थिक नीति

पूंजी की सीमांत लाभक्षमता की धारणा की आलोचनाएं

1. अनिश्चित धारणा।
2. पूर्ण प्रतियोगिता की अवास्तविक मान्यता पर आधारित।
3. संपूर्ण अर्थव्यवस्था से संबंधित।
4. विनियोग मांग वक्र की व्याख्या अपूर्ण।
5. ब्याज दर पर आशंकाओंका या प्रत्याशाओंका प्रभाव।

Thank You!